बरवै नायकाभेद और नखसिख ।

नव्वाब अब्दुलरहीमखानखाना उपनाम रहिमन वा, रहीम कृत और अश्विनीनिवासी नरहरिकविबंशीय महापात्र बन्दीजन श्रीसेवकराम कृत ।

नैना मत रे रसना, निज गुन लीन ।
कार तू पिय झझकारि, अजगुत कीन ॥
पग तें सिर लगि बेनी, कि अहि सभूख ।
कनकलता चढ़ि ससि को, पियत मयूख ॥

डुमरावँनिवासी नकछेदी तिवारी द्वारा परिशोधित और प्रकाशित ।

यह पुस्तक काशी भारतजीवन प्रेस में मिलेगी ।

काशी ।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुआ ।

सन् १८९२ ई० ।

प्रथम बार १००० पुस्तक] [दाम /)

भूमिका।

यह पुस्तक प्रसिद्ध पत्र कविवचनसुधा बनारस द्वारा प्रकाशित हो चुकी थी किन्तु पुस्तकाकार न होने के कारण पूर्ववत् अभाव बना रहा अतएव सर्वसाधारण के अवलोकनार्थ पुस्तकाकार प्रकाशित की गई। इस पुस्तक के रचयिता श्रीमान् नव्वाब अब्दुल रहीम खानखाना उपनाम रहीम वा, रहिमन, खानखाना बैरम खां के पुत्र सम्बत् १६०० में अरबी, फारसी, तुरकी, संस्कृत और ब्रज भाषा इत्यादि अनेक भाषा के पूर्ण पण्डित हो गुज़रे हैं। ये महापुण्यशाली पुरुष श्रीमान् महम्मद जलालुद्दीन अकबर बादशाह दिल्ली की आंख की पुतली थे। इन्हीं के पिता ख़ानख़ाना बैरमखां की जमामर्दी से बादशाह हुमायूं को काबुल का राज्य दोबारा हासिल हुआ था। ख़ानख़ाना जी पण्डित, कवि, मुल्ला, शायर, ज्योतिषी, गवैया, बजवैया तीरंदाज, बरकंदाज इत्यादि सब गुणवान मनु-

य्यों की बड़े कदरदान थे इनकी सभा अहर्निशि विद्वज्जनों से भरी पूरी रहती थी इन्हीं महाराज ने बिहारीलाल सतसईकार को एक दोहे पर खड़ा कराकर अशर्फियों से तोपवा दिया था। एक छप्पय पर गंग कवि को छत्तिस लाख रुपैया दिया था निदान यह निश्चय है कि सम्बत् १६०० में ऐसा दानी दूसरा न हुआ इनके बनाये संस्कृत में श्लोक अत्यन्त उत्तम तथा कठिन हैं, भाषा में नवरस के कवित्त दोहा बहुतही सुन्दर हैं, नीति सम्बन्धी ऐसे अपूर्व दोहे हैं कि पढ़ने वाले को तृप्ति नहीं होती, इनके बनाये छ ग्रन्थ है, जो सुने जाते हैं अर्थात् रहीमसतसई १, बरवा नयाका भेद २, रास पंचाध्याई ३, मदनाष्टक ४, दीवान फारसी ५, बाकियात बाबरी फारमी ६ । इनका जन्म ९६४ हिजरी में हुआ था और ७२ वर्ष के होकर १०३६ हिजरी में सुरलोक को सिधारे ऐसा पुरुष अब हिन्दुस्थान में होना अत्यन्त दुर्लभ है।

दूसरी पुस्तक श्री बैकुण्ठबासी अश्विनी नगर निवासी नरहरि कवि वंशीय महापाच बन्दीजन श्री सेवकराम जी कृत नखसिख (केवल इस लिये कि पुराने अद्वितीय विद्वानों के आगे नई रचना कैसी है) आपलोगों के दर्शनार्थ प्रकाशित किया है। इनका जीवन चरित्र इन के बनाये वागविलास, पीपा प्रकाश और ज्योतिष प्रकाश इत्यादि अपूर्व ग्रन्थों में प्रकाशित करूंगा।

अन्त में श्रीमान् बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी तथा आप सज्जन ग्राहक सुखरासी महाशयों को कोटिशः धन्यबाद देता हूं कि जिनकी कदरदानी से ऐसे २ ग्रंथों के प्रकाशित करने का अवसर मिलता है। यह पुस्तक मुझे अश्विनीनिवासी श्री स्यामसुन्दर मिश्र बैद्य द्वारा मिली थी अतएव उनको भी धन्यबाद देता हूं।

आपलोगों का कृपा पाच
नकछेदी तिवारी—डुमरांवं।

श्रीगणेशाय नमः ॥

बरवै नायिका भेद ।

नव्वाब अब्दुलरहीम नव्वाब खानखाना कृत ।

दोहा ।

कबित कह्यो दोहा कह्यो तुलै न छप्पै छन्द ।
बिरच्यो यहै बिचारि कै यह बरवै रस छन्द ॥

अथ मुग्धा बरवा ।

लहरत लहर लहरिया, लहर बहार ।
मोतिन जरी किनरिया, बिथुरे बार ॥ १ ॥

लागेउ आनि नवेलियहि, मनसिज बान ।
उकसन लाग उरोजवा, दृग तिरछान ॥ २ ॥

अज्ञात ।

कवन रोग दुहुं छतिया, उपजेउ आय ।
दुखि दुखि उठै करेजवा, लगि जनु जाय ॥३॥

ज्ञात ।

औचक आय जोबनवां, मोहि दुख दीन ।
छुटि गो संग गोइयवां, नहि भल कीन ॥ ४ ॥

नबोढ़ा ।

पहिरति चूनि चुनरिया, भूषन भाव ।
नैनन देति कजरवा, फूलनि चाव ॥ ५ ॥

अथ बिस्रब्धनबोढ़ा ।

जंघन जोरति गोरिया, करति कठोर ।
कुअन न पावै पियवा, कहुं कुच कोर ॥६॥

मध्या ।

रहत नयन के कोरवा, चितवनि छाय ।
चलत न पग पैजनियां, मग अहटाय ॥ ७ ॥

प्रौढ़ा ।

भोरहि बोलि कोइलिया, बढ़वति ताप ।
घरि घरि एक घरिअवा, रहु चुप चाप ॥८॥

इति स्वकिया ।

अथ परकीया ।

सुनि सुनि कान मुरलिया, रागन भेद ।
गैल न छाड़ति गोरिया, गनति न खेद ॥९॥
निसदिन सासु ननदिया, मुहि घर हेर ।
सुनइ न देति मुरलिया, मधुरी टेर ॥ १० ॥

अनूढ़ा ।

मोहि बर जोग कन्हैया, लागउं पाय ।
तुहुं कुलपूज देवतवा, होइ सहाय ॥ ११ ॥

सामान्या ।

लखि लखि धनिक नयकवा, बनवति भेख ।
रहि गइ हेरि अरसिया, कजरा रेख ॥ १२ ॥

क्रियाबिदग्धा ।

बाहिर लैके दियवा, बारन जाय ।
सासु ननद ढिग पहुंचत, देति बुझाय ॥ १३ ॥

बचनबिदग्धा ।

तनिक सि नाक नथुनियां, मित हित नीक ।
कहति नाक पहिरावहु, चित दै सींक ॥ १४ ॥

सुरतिगोपना ।

होइ कत आइ बदरिया, बरखहिं पाथ ।
जैहौं घन अमरैया, सुगना साथ ॥ १५ ॥

जैहौं चुनन कुसुमिआं, खेत बड़ि दूर ।
नौवा केरि छोहरिया, मुहि संग कूर ॥ १६ ॥

लक्षिता ।

आजु नयन के कजरा, औरै भांति ।
नागर नेह नवेलिया, सुदिने जाति ॥ १७ ॥

त्रिविध अनुसयना ।

धीरज धरु किन गोरिया, करि अनुराग ।
जात जहां पिय देसवा, घन बन बाग ॥१८॥
जनि मरु होय दुलहिया, करि मन ऊन ।
सघन कुंज ससुररिया, वो घर सून ॥ १९ ॥

द्वितीयानुसयना ।

यमुनातीर तरुनियां, लखि भो सूल ।
झरि गो रूख बेइलिया, फलत न फूल ॥२०॥
ग्रीषम दवत दवरिया, कुंज कुटीर ।
तिमि तिमि तकत तरुनिअहि, बाढ़ी पीर ॥

तृतीयानुसयना ।

मितवा करत बसुरिया, सुमन सपात ।
फिरि फिरि करति तरुनियां, सन पछतात ॥
मित उततें फिरि आयउ, देखउ न राम ।
मै न गई अमरैया, लहेउ न काम ॥ २३ ॥

मुदिता ।

जैहों कालि नेवतवा, भव दुख दून ।
गाँव करसि रखवरिया, सब घर सून ॥ २४ ॥

नेवतहि गइलि ननदिया, मैके सासु ।
दुलहिनि तोरि खबरिया, आवै आसु ॥ २५ ॥
जस मदमातल हथिया, हुमकत जाति ।
चितवति जाति तरुनियां, मन मुसुकाति॥२६॥
चितवत ऊंच अटरिया, दहिनि बाम ।
लाखन लखत बिछियवा, लखी सकाम ॥२७॥

अन्य संभोग दुःखिता ।

मैं पठयउ जिहि कमवां, आयसि साधि ।
छुटिगो सीसको जुरवा, कसि कैं बांधि ॥२८॥
मुहि तुहि हरबर आवत, भवपथ खेद ।
रहि रहि लेति उससवा, बहत प्रसेद ॥ २९ ॥

भूत सुरति गोपना ।

चूनत फूल गुलबवा, डार कटील ।
टुटिगो बन्द अंगियवा, फटि पट नील ॥३०॥
आयसि कवनेउ ओरवा, सुगना सार ।
परिगौ दाग अधूरवा, चोच चोटार ॥ ३१ ॥

प्रेमगर्बिता ।

आपुहि देत जवकवा, गूंदत हार ।
चुनि पहिराय चुनरिया, प्रान अधार ॥ ३२ ॥

अवरन पाय जवकवा, नाइन दीन ।
मुहि पग आगर गोरिया, आनन कीन ॥३३॥

रूपगर्बिता ।

खीन मलिन बिषभैया, औगुन तीन ।
मोहि कहत बिधुबदनी, पिय मतिहीन ॥३४॥
दातुल भैंस सुगरुवा, निरस पखान ।
यह मधुभरल अधरवा, करसि गुमान ॥ ३५ ॥

प्रोषित पतिका ।

ते अब जासि बेइलिया, बरु जरि मूल ।
बिनु पियसूल करेजवा, लखि तुव फूल ॥३६॥
का तुम जुगल तिरियवा, झगरति आय ।
पिय बिनु मनहुं अटरिया, मुहि न सोहाय ॥
कासों कहौं संदेसवा, पिय परदेसु ।
लगेहु चइत नहि फूले, तेहि बन टेसु ॥३८॥

मुग्धा खंडिता ।

सखिसिख मानि नवेलिया, कीन्हसि मान ।
पियबिनु कोप भवनवां, ठानसि ठान ॥३९॥
सीस नवाय नवेलिया, निचवइ जोय ।
छितिखनि छोर छिगुरिया, सुसुकति रोय॥४०॥

मध्या खंडिता ।

गिरि गइ पीय पगरिया, आलस पाय ।
पवढ़हु जाय बरोठवां, सेज डसाय ॥ ४१ ॥
पोछहु अधर कजरवा, जावक भाल ।
उपजेउ पीतम छतिया, बिनगुन माल ॥४२॥

प्रौढ़ा खंडिता ।

पिय आवत अंगनैया, उठि कै लीन ।
साथें चतुर तिरियवा, बैठक दीन ॥४३॥
पौढ़हु पीय पलंगिया, मीजहुं पाय ।
रैनि जगे को निंदिया, सब मिटि जाय ॥४४॥

परकीया खंडिता ।

जेहि लगि सजन सनेहिया, छुटि घरबार ।
आपन हित परिवरवा, सोच परार ॥ ४५ ॥

गनिका खंडिता ।

मितवा ओठ कजरवा, जावक भाल ।
लियसि काढ़ि बरिइनियां, तकि मनि माल ॥

मुग्धा कलहन्तरिता

आयहु अबहिं गवनवां, जुरुते मान ।
अब रस लागिहि गोरियहि, मनपछतान ॥४७॥

मध्या क० ।

मैं मतिमंद तिरियवा, परलेउ भोर ।
तेहि नहिकन्त मनवलेंउ, तोहि कछु खोर ॥४८॥

थकि गइ मन बनहरिया फिरिगो पीय ।
मैं रुठि तुरित न लायंउ हिमकर हीय ॥४९॥

परकीया ।

जेहि लगि कीन बिरोधवा, ननद जिठानि ।
रखिउ न लाय करेजवा, तेंहि हित जानि ॥

गनिका कलहन्तरिता ।

जिहि दीन्हेंउ बहुबिरिया, मुहि मनिमाल ।
तिहिते रूठेउ सखिया, फिरि गए लाल ॥५१॥

मुग्धा बिप्रलब्धा ।

लखि न कन्त सहेटवा, फिरि दुबराय ।
धनियां कमलबदनियां, गइ कुंभिलाय ॥५२॥

मध्यम बि० ।

देखि न केलि भवनवा, नंदकुमार ।
लै लै ऊंचि उससवां, है बिकरार ॥ ५३ ॥

प्रौढ़ा बि० ।

देखि न कन्त सहेटवा, भो दुखपूर ।
भौ तन नैन कजरवा छैगो भूर ॥ ५४ ॥

परकीया ।

बैरिन भो अभिसरवा, अति दुखदानि ।
प्रातउ मिलउ न मितवा, भइ पछतानि ॥५५॥

गनिका वि० ।

करिकै सोरह सिंगरवा, अतर लगाय ।
मिलेउ न लाल सहेटवा, फिरि पछताय ॥५६॥

मुग्धा उत्कंठिता ।

भो जुगजाम जमिंनियां, पिय नहिं आय ।
राखिउ कवन सवतिया, रहि बिलमाय ॥५७॥

मध्या उ० ।

जोहति तीय अवनवा, पिय की बाट ।
बेचिउ चतुर तिरियवा केहि के हाट ॥ ५८ ॥

प्रौढ़ा उ० ।

पियपथ हेरति गोरिया, भो भिनुसार ।
चलहु न करिहि तिरियवा, तुव इतबार॥५९॥

परकीया उ० ।

उठि उठि जाति खिरिकिया, जोहति बाट ।
कतहुं न आवतमितवा, सुनि सुनि खाट॥६०॥

गनिका उ० ।

कठिन नींद भिनुसरवा, आलस पाय ।
धन दै मूरख मितवा, रहल लोभाय ॥ ६१ ॥

मुग्धावासकसज्जा ।

सुभग बिछाय पलँगिया, अंग सिंगार ।
चितवति चौंकि तरुनियां, दै दृग द्वार ॥६२॥

प्रवत्स्यतिप्रेयसी ।

बन घन फूलहि टेसुवा, बगियनि बेलि ।
चलि बिदेश पियरवा, फगुआ फेलि ॥ ६३ ॥

परकीया प्र०प्रे० ।

मितवा चलेउ बिदेशवा, मन अनुरागि ।
पिय की सुरति गगरिया, रहि मग लागि॥६४॥

गनिका प्र० ।*

पीतम इक सुमिरिनियां, मुहि देइ जाहु ।
जेहि जपि तोर बिरहवा, करब निबाहु ॥६५॥

अथ मुग्धा आगतपतिका ।

बहुत दिवस पर पियवा, आयउ आज ।
पुलकित नवलदुलहिया, कर गृह काज॥६६॥

मध्या आ० ।

पियवा आय दुअरवा, उठि किन देख ।
दुरलभ पाय बिदेशिया, मुद अवरेख ॥ ६७ ॥

प्रौढ़ा आ० ।

आवत सुनत तिरियवा, उठि हरखाय ।
तलफत मनहुं मछरिया, जनु जल पाय ॥६८॥

परकीया आगतप० ।

पूछति चली खबरिया, मितवा तीर ।
हरखित अतिहि तिरियवा, पहिरत चीर॥६९॥

गनिका आ० ।

तब लगि मिटहि न मितवा, तन की पीर ।
जौलगि पहिरो न हरवा, जटित सुहीर ॥७०॥

उत्तमा ।

लखि अपराध पियरवा, नहि रिस कीन ।
बिहँसत चँदन चउकिया, बैठक दीन ॥७१॥

मध्यमा ।

बिनुगुन पिय उर हरवा, उपटेउ हेरि ।
चुप ह्वै चित्र पुतरिया, रहि मुख फेरि ॥७२॥

अधमा ।

बैरिहि बैर गुमनवा, जनि कछ नारि ।
मानिक औ गजमुकुता, जौलगि बारि ॥७३॥

नायक ल० ।

सुन्दर चतुर धनिकवा, जाति की ऊंच ।
केलि कला परबिनवा, सील समूच ॥ ७४ ॥

अनुकूल० ।

करत न हिय अपरधवा, सपनेहु पीय ।
मान करन कौ बिरियां, रहिगो हीय ॥ ७५ ॥

दक्षिण ।

सौतिन करहिं निहोरवा, हमकहँ देहु ।
चुन चुन चंपक चुरिया, उच से लेहु ॥ ७६ ॥

सठ—छूटेउ लाज डगरिया, औ कुलकानि ।
करत जात अपरधवा, परिगइ बानि ॥ ७७ ॥

धृष्ट—जहँवां जात रइनियां, तहंवां जाहु ।
जोरि नयन निरलजवा, कत मुसकाहु ॥७८॥

मानी—अब भरि जनम सहेलिया, तकब न ओहि।
ऐठलिगो अभिमनियां, तजिगो मोहि ॥ ७९ ॥

चतुर ।

सघन कुंज अमरैया, सीतल छांह ।
झगरति आय कोइलिया, पुनि उड़ि जाह॥८०॥
खेलत जानिसि टोलवा, नन्दकिसोर ।
छुइ वृषभानकुँअरिया, होइ गइ चोर ॥८१ ॥

अथ नायका भेद ।

पति उपपति बैसिकवा, त्रिबिध बखानि ।
बिधि सो व्याह्यो गुरुजन, पति सो जानि ॥८२॥
पति—लैकर सुघर खुरुपिया, पिय के साथ ।
छइबे एक छतरिया, बरषत पाथ ॥ ८३ ॥

उपपति ।

झाँकि झरोखवन गोरिया, अँखियन जोर ।
फिरि चितवनि चित मितवा, करति निहोर ॥

बैसिक ।

जनु अति नील अलकिया, बनसी लाय ।
मो मन बारबधुअवा, मीन बझाय ॥ ८५ ॥
करि लै जंच अटरिया, पिय सँग केलि ।
कबधौं पहिरि गजरवा, हार चमेलि ॥ ८६ ॥

स्वप्नदर्शन ।

पीतम मिलि सपनवां, भो सुख, खानि ।
आनि जगायेसि चेरिया; भइ दुखदानि ॥८७॥

चित्र दर्शन ।

पिय मूरति चितसरिया, चितवति बाल ।
चितवत अवध बसैरवा, जपि जपि माल॥८८॥

श्रवन दर्शन ।

आयउ मीत बिदेसिया, सुनि सखि तोर ।
उठि किन करसि सिंगरवा, सुनि सिख मोर ॥

साचात दर्शन ।

बिरहिनि और बिदेशिया, भो इक ठौर ।
पिय मुख तकत तिरियवा, चन्द चकौर ॥९०॥

मण्डन ।

सखियन कीन सिँगरवा, रचि बहु भाँति ।
हेरति नैन अरसिया, मुरि मुसुकाति ॥ ९१ ॥

शिचा ।

छाकहु बइठ दुआरिया, मीजहु पाय ।
पिय तन पेखि गरमियां, बिजन डोलाय॥९२॥

चुप होइ रहिउ सँदेसवा, सुनि मुसुकाय ।
पिय निज कर बिछुवनवां, दीन्हि उठाय ॥९३॥

परिहास ।

बिहँसति भौंह चढ़ाये, धनुष मनोय ।
लावत उर अबलनियां, उठि उठि सीय ॥९४॥

इति ।

बरवै नखसिख-सेवक कबि कृत ।

गनपति, गुरु, गिरिजापद, कमल मनाय ।
पाय कृपा, मधु मन, अलि, अति हरखाय ॥१॥
नखसिख बरनत सेवक, नखसिख देखि ।
नखसिख पूरत आनद, नखसिख लेखि ॥ २ ॥

अर्धसमवृत्ते बरवा छन्द लक्षण ।

बारह मात्रा प्रथमे, दुसरेहिं सात ।
गलदुदलानो चौपद, बरवा खात * ॥ ३ ॥

अथ मुख बर्नन ।

सुछबि सिंधु मथि प्रगटेहि, मदन मयंक ।
तब तुव मुख सम कहिये, रहित-कलंक ॥ ४ ॥
तुव मुख सम तुव मुख है, सब गुनलीन ।
कमल मुकुर ससि सिगरे, भाव-बिहीन ॥ ५ ॥

अथ मुखसारी बर्नन ।

सारी सहित किनारी, मुखछबि देख ।
मनहुं सरदनिसि चहुंदिसि, दुति परबेख ॥ ६ ॥

---

* खात = ख्यात अथवा विख्यात = प्रसिद्ध ।

अथ केश बर्नन ।

अति कारे सटकारे, कच तियश सीस ।
धनि मनसिज किय एक संग, कुहु रजनीस ॥

अथ सीसफूल बर्नन ।

सीस फूलमनि केसनि, अति छबि देत ।
तमहि दाबि जनु सोहत, सुरज सचेत ॥ ८ ॥

अथ मांग बर्नन ।

भरि सिंदूर पर मोतियन, मांग अनूप ।
पटियन मिलि तिरवेनी, कामद रूप ॥ ९ ॥

अथ बेनी बरनंन ।

नागिन सी यह बेनी, ना गिनि जाय ।
दृग पकरत हठि काटति, मन कहँ धाय ॥१०॥
पग से सिर लगि बेनी, किअहि सभूख ।
कनकलता चढ़ि ससि को, पियत पियूख॥११॥

अथ बेनी पान बर्नन ।

बेनी पानहि बेनी, रची निदान ।
नागबेलि भइ साँची, सकुसुम पान ॥ १२ ॥

अथ अलक वर्नन ।

लटकी अलक कपोलनि, अतनु खँभार ।
की मेरि मनि मुकुरनि, दई दरार ॥ १३ ॥
मुकुर कपोलनि अलकैं, की अहि बाल ।
डँसत बिम्ब प्रतिबिम्बहु, अद्‌भुत ख्याल ॥१४॥

अथ बेंदिया बर्नन ।

बंदियान मनिकृत अलि, अलक मझार ।
दृग श्रुति मुख दर पर मनु, बन्दनवार ॥ १५ ॥
दृग पुतरी पर तिय किय, मुख ससि पान ।
बन्दी मिसि कच निशि जनु, किय व्यवधान ॥१६॥

अथालिक ।

अलिक चिलिकजुत मनहर, मिलिक अनूप ।
दृग देवन हित दीन्हौ, मनसिज भूप ॥ १७ ॥

अथ बेना ।

बेना बँध्यो लिलरवा, कह्यौ न जात ।
मधुर सुगन्धित निकरति, मुख ते बात ॥ १८ ॥
तिय लिलार मनि बेंदा, साँच उदोत ।
मेषरु झष की सूरज, दुति धर होत ॥ १९ ॥

अथ खौरि बर्नन ।

हरित पीत अरुनासित, सितमनि खौरि ।
हित बनि ग्रह मिसि करि छबि, निरखत तोरि॥

अथ स्यामबिन्दु बर्नन ।

तिय लिलार पर सोहत, मृगमद, बिन्दु ।
रति पति उर धरि जोगिन, जारत इन्दु ॥२१॥

अथ दिठौना बर्नन ।

अन धन देखि लिलरवा, अनखन धारु ।
समलहुं दिय दुति मनसिज, भल करतार॥२२॥
जलज बदन पर थित अलि अनखन रूप ।
लीन हार हिय कमलहि, डसत अनूप ॥ २३ ॥

अथ भौंह बर्नन ।

काहु बचिहै कोउ कैसे, गहि दृग तीर ।
लीन्ही भौंह कमनियां, मनसिज बीर ॥ २४ ॥
भौंहन दृग पर सौरनि, सांस रिसवान ।
कमल उपर बिष बोरी, धरी कृपान ॥ २५ ॥

नेत्र बर्नन ।

नयन मीन अलि खंजन, कमलन जान ।
उर महँ लगि नहिं निकरत, नटवर बान ॥२६॥

कानन ढिग मग मुख छवि, जलधि कि मीन।
भौंह धनुष के सर दृग, समर अधीन ॥ २७ ॥

अंजन बर्नन।

अजगुत करत कजरवा, तिय के नैन।
जोइ निरखत तेहि लूटत, लै सँग सैन ॥ २८ ॥
सुदसा ज्वलन सनेहवा, कारन तोर।
अंजन सोइ उर प्रगटत, लगि दृग कोर ॥२९॥
यह अति रिजु अलि अँखियन, कजरा स्याम।
औरनि उर अरुनाई, प्रगटत राम ॥ ३० ॥

श्रवन बर्नन।

श्रुति रसाल की फाँकियन, मनु न अघात।
क्यों अब पतवन छायेहु, तिनके गात ॥ ३१ ॥
मुकुतनि को सँग लीन्हे, श्रुति कहवाय।
बारिन के संग बिहरत, बड़े अन्याय ॥ ३२ ॥

करनफूल बर्नन।

करनफूल छवि कानन, मनिगन भार।
जनु सेवत रवि मनु गुनि, है श्रुति सार ॥ ३३ ॥

अथ बिजुरी बर्नन ।

कानन लसत बिजुरिया, मन हरि लीन ।
तिन पर परै बिजुरिया, जिन रचि दीन ॥३४॥

कपोल वर्णन ।

नहि मधूक नहि मनसिज, मुकुर बिधान ।
तिय कपोल मनु रागत, पाटल पान ॥ ३५ ॥
मन धन हर्यो हमारो, साह कपोल ।
श्रुति ढिग मुकुर गयो ह्वै, घटत न मोल ॥३६॥

तिल बरनन ।

तिय कपोल पर मनहर, तिल छबि धाम ।
कै मधूक अलि मज्जत, छवि सर काम ॥ ३७ ॥

नासिका बर्नन ।

नासिक ना यह सुक है, ध्याइ अनंग ।
बेसरि की छबि बकसत, मुकुतन संग ॥ ३८ ॥

अथ नथ झुलनी बर्नन ।

झूलति यह न झुलनियां, बेसरि बन्द ।
चिबुक गाड़ हग डारत, छबि ढिग फन्द ॥३९॥

अथ नासावेध लवंग वर्णन ।

अब लगि नाक बेध सों बेधिसि मार ।
लौंग बान तहँ धारिसि, को रखवार ॥ ४० ॥

अथ अधर बर्नन ।

अधर अरुन मधुरनि हित, कवि कहँ कौन ।
मनि बिद्रुम दल बिम्बनि, उपमा दीन ॥४१॥
पियति जहां मधु रसना, सातत नैन ।
झुकत अतनुगति अधरनि, कहत बने न ॥४२॥

अथ दसन बर्नन ।

निदरि पदिक बिबि दाड़िम, जब बिहसन्ति ।
मिसी सुघन बिच चपला, जनु चमकन्ति ॥४३॥

अथ बीरी वर्णन ।

तुव बिरिया रंग पातल, अद्भुत ढंग ।
तोहि मोहि औरनि सजनी, करति सुरंग॥४४॥
मानुष रतन करनि यह, बिरिया आज ।
स्यामहि लाल सुसौतिन, किय पुखराज ॥४५॥
बिरिया उचित जो लाखा, किय अधरान ।
पै केहि भाँति सुलाखा, हृदै बिरान ॥ ४६ ॥

अथ मंजन ।

अधर दशन लाली पर, मिसी सुबेस ।
परनुराग परमानहु, मढ्यौ खँदेस ॥ ४७ ॥
अधर दशन पर लाली, मिसी मलूम ।
मदन ज्वलन पर सोहति, मानहु धूम ॥ ४८ ॥

अथ रसना बर्नन ।

प्रेमलता उर किसलै, मुख दरसात ।
रसना केहि बिधि कहिये, बचन मिठात ॥४९॥

अथ बानी ।

कोकिल बीन बँसुरिया, देहु बिडारि ।
ये सब हमहिं दुखावैं, अलि भ्रम डारि ॥ ५० ॥

अथ हास बर्नन ।

हँसहु न बिरी खवावत, परिहहु लोल ।
चकचौंधत कर गड़िहैं, जाइ कपोल ॥ ५१ ॥

चिबुक बर्नन ।

हनु रसाल रचि तब बिधि, हो बुधिवन्त ।
रचत न गाड़ गिरत जहँ, दृग सुचि सन्त ॥५२॥

अथ कण्ठ वर्णन ।

कम्बु कपोत सुकण्ठहिं, कह कबि छाम ।
टीकहि जुत लखि नृप कोउ, पूरत काम ॥५३॥

अथ कंठभूषन बर्नन ।

तिलरी पंचलरी नहि, कंठ अनन्द ।
कानन की ढिग मनसिज, ठग के फन्द ॥५४॥
मानिकमई गुलूबंद, न गर दिखाइ ।
लाल परे गर तेरे, जनि रिसिआइ ॥ ५५ ॥

अथ लघु कुच बर्नन ।

सति बिद्याधि धन तुव उर, भइ दृढ़ रूप ।
चलु चलु हरिहि दिखाऊं, भिषज अनूप॥५६॥
निबिआ बद्र नरंगी, है हरि प्रान ।
चहत न कनक रु करि के, कुम्भ महान ॥५७॥

अथ पूर्ण कुच वर्णन ।

बरहर सम कुच तेरे, पुरहर आन ।
नहरु अतनु सुख पुरवत, कौन बिधान ॥५८॥
कनक करी के कुम्भक, मठ गिरि ई न ।
तुव कुच सम करि बरनत, कबि रसहीन॥५९॥

अथ कञ्चुकीयुत कुच वर्णन ।

काम, कुही कुच तेरे, सखी सचेत ।
कांचुकि कुलह सहित दृग, खग गहि लेत॥६०॥

अथ चम्पाकली वर्णन ।

चम्पाकली अली तुव, उर कोउ और ।
नतरु भौंर दृग हरि के, करत न दौर ॥ ६१ ॥

अथ उरबसी वर्णन ।

अलि मेरो हरि हरि सम, आज लखात ।
नतरु उरबसी तुव लखि, क्यों ललचात ॥६२॥

अथ मुक्ताहार वर्णन ।

मुकुतहार कुच बर पर, लसत अपार ।
मनहुं कामप्रद हर पर, सुरसरि धार ॥ ६३ ॥

अथ बाहु वर्णन ।

बहियाँ अरी अबहियाँ, अजगुत कौन ।
छहियाँ छुई न छहियाँ, फाँसिहि दौन ॥ ६४ ॥
काम पास, ए बहियाँ, की कोउ और ।
बँधे आपु दृग जिनमें, करि कर दौर ॥ ६५ ॥

कनकलता सम तिय तुव, बाहु बिशाल ।
लपटन की हित चाहति, स्याम तमाल ॥ ६६ ॥

अथ भुज भूषन बर्णन ।

धनि धनि धनि तुव बहियां, ए गुन गोरि ।
कङ्कन की जहं कीमति, लाख करोरि ॥ ६७ ॥
बहियां समर सिपहियां, बांकत जीन ।
छन्नन पछेली पहुंचो, छलन बिलीन ॥ ६८ ॥
बायें भुजन सभूषन, भोरि दिखाइ ।
काहु केहि कारन कीन्ही मोरि सजाइ ॥ ६९ ॥
भरि भरि बांहन चुरियां, भूषन साजि ।
निजबल अतनु जगायेउ, गइ रति लाजि॥ ७० ॥

अथ कलाई बर्णन ।

ऐसी नरम कलाई, भई न होहि ।
नजरि परत न कलाई, तबतें मोहि ॥ ७१ ॥

अथ कर बर्नन ।

काहूं कमल काहुं किसलै, लखि को ठौर ।
धनि तिय तुव कर सम हित, किय इक ठौर ॥

मेंहदीयुत कर वर्णन ।

इक लाली कर दूजे, मेंहदी पाइ ।
मलि करेज लखियन कि, गहिरि दिखाइ ॥७३॥

अथ सांगुलीक नखांगुली वर्णन ।

छलन सहित अँगुरिन कौ, सुनख उमंग ।
मनहुं समर केसर सखि, श्रोणित रंग ॥ ७४ ॥

अथ पेटी वर्णन ।

पेटी सुछबि लपेटी, भल थल पाइ ।
पकरसि काम बनैठी, राख छपाइ ॥ ७५ ॥

अथ नाभी वर्णन ।

नाभि कूप तुव पूरित, पय दरसात ।
हरि दृग पथिकन पानिप, पियत अघात ॥७६॥

अथ रोमराजी वर्णन ।

यह सुरोम की राजी, तिय उदरे न ।
मन्त्र मोहनी की लखि, काम करे न ॥ ७७ ॥

अथ कटि वर्नन ।

लगी जानि मति भूलहु, कटि कत नाम ।
ब्रह्मचरित सम सुमिरहु, है अति क्षाम ॥ ७८ ॥

एक ओर हरिमन्दिर, नदि एक ओर ।
बीच मुकुति कटि पाई, करिय न दौर ॥ ७९ ॥
कटि न सोचिबे लायक, रमत न भीति ।
टुनए कैसन टूटति, है परतीति ॥ ८० ॥

अथ कटिकिङ्किनी वर्णन ।

कटि किङ्किनी न जानहु, करि करि प्यार ।
बँध्यो समर घर दर पर वन्दनवार ॥ ८१ ॥

अथ नितम्ब बर्नन ।

रचे नितम्ब पुलिन सम, पीबर जोइ ।
सुरत समै सुख हित तर, कोमल होइ ॥ ८२ ॥
पीवर निरखि नितम्बनि, पुलिन कुबोल ।
कहु रति समर सुरथ कै, चक्र अनमोल ॥८३॥

अथ घांघरी बर्नन ।

घांघरी न क्षत कांचन, काम उदार ।
बिरचो मन जमनौका, जनु निज द्वार ॥ ८४ ॥

अथ कामायन ।

अतन वतन को बरनै, मन थिर है न ।
नयन बयन बिन बयना, बिगलित मै न ॥८५॥

भंक कि मृगमद केसरि, पंक मझार ।
मदन सदन कि कमलदल, अलख दरार ॥८६॥

अथ जंघ वर्णन ।

उरू जानु जुत जंघनि, जिन लखि लीन ।
कनक कदलि करि कर की, छबि तजि दीन॥
जघन सघन दुति कंचन, कदलि सदंभ ।
मदन सदन दर दुहुं दिसि, मंगल खंभ ॥८८॥

अथ पायल बर्नन ।

पायल बजति उतायल, तायल कीन ।
पुनि करि कायल घायल, हायल कीन ॥८९॥

अथ कड़ा वर्णन ।

चूरन की छबि पूरन, कही न जाय ।
चूरन मौमन तूरन, दबि करि पाय ॥ ९० ॥

अथ पग पान बर्नन ।

सांकरि है बधि बेधत मुख रन बान ।
पान भए मम बध के, ए पग पान ॥ ९१ ॥

अथ बिछिया बर्नन ।

हंस बंस सम बिछिया, दंस करन्त ।

अचरज मधुरे बोलत, प्रान हरन्त ॥ ९२ ॥

अथ पग बर्णन ।

अमल कमल सम नीकि, सोहत पाव ।

नयन सुमन कर चाहत, बाढ़ बराव ॥ ९३ ॥

पग कमलन अलि पग तें, कोउ सिपाह ।

लाली भरे सबिछुअन, समर उछाह ॥ ९४ ॥

अथ महाउर बर्नन ।

तिय की चरन महाउर, राउर आन ।

किथ अलि लखत कहाउर, बाउर प्रान ॥ ९५ ॥

दियौ महाउर तुव पग, हरि बड़ भाग ।

गह्यौ आनि मनु सरनहि, सौति सोहाग ॥ ९६ ॥

अथ सुगन्ध बर्नन ।

महर महर घर बाहर, परमल देह ।

लहर लहर छबि तम जिमि, ज्वलन सनेह ॥ ९७ ॥

अथ सर्बांग बर्नन ।

तारा तमक बिजुरिआ, कनकलतान ।

परी परीं कोउ उतरी, भाउ महान ॥ ९८ ॥